प्रारम्भिक कक्षाओं में अँग्रेज़ी शिक्षण के लिए वर्कशीट का उपयोग

वैष्णवी वी

साल 2021 में देशभर के स्कूल आंशिक रूप से अलग–अलग समय पर फिर से खुलते रहे। कर्नाटक राज्य में दो माह के लॉकडाउन समाप्त होने पर, बेंगलूरु ज़िले के सरकारी स्कूलों ने आधिकारिक तौर पर पहले माध्यमिक और हाई स्कूल की कक्षाएँ बहाल कीं। फिर कुछ महीनों में प्राथमिक व पूर्व-प्राथमिक कक्षाएँ भी इसी तरह चरणबद्ध ढंग से पुनः आरम्भ हुईं।

बच्चे कक्षाओं में पहुँच गए थे। अब शिक्षकों पर यह बड़ी ज़िम्मेदारी थी कि वे बच्चों के सीखने के क्रम को वापस पटरी पर लाएँ। साथ ही ऐसी शैक्षणिक कार्यनीतियाँ खोजें जिनसे विद्यार्थियों के भीतर भय व चिन्ता पैदा किए बग़ैर उनकी बुनियादी दक्षताओं में आई दरारों को भरा जा सके।

इस महत्त्वपूर्ण दौर में पूरे ज़िले के स्कूलों में बच्चों को जोड़े रखने के लिए वर्कशीट का माध्यम व्यापक रूप से इस्तेमाल किया गया। बच्चे वर्कशीट से पूरी तरह अनजान नहीं थे। ये स्कूल बन्द होने के समय शिक्षा विभाग व अन्य शैक्षिक संगठनों द्वारा की गई पहलों के अन्तर्गत दी गईं थीं।

मैं बुनियादी साक्षरता पर केन्द्रित अँग्रेज़ी भाषा शिक्षण के साथ क़रीबी रूप से काम कर रही थी। मेरी रुचि यह समझने में अधिक थी कि कैसे कक्षा1- से 3 में अँग्रेज़ी की वर्कशीट विद्यार्थियों के सीखने में सहयोग देती हैं और पाठयपुस्तकों के साथ इस्तेमाल किए जाने पर क्या ये द्वितीय भाषा को पढ़ाने के लिए पर्याप्त व प्रभावी होंगी। यह लेख इन सवालों पर छानबीन करने की कोशिश करता है। यह स्कूलों के पुनः खुलने पर बेंगलूरु के कुछ सरकारी स्कूलों की भाषा की कक्षाओं के मेरे अवलोकनों व सह-शिक्षण से हासिल सीखों पर आधारित है।

छोटे बच्चों के साथ काम करते हुए यह याद रखना ज़रूरी है कि कोई बच्चा सिर्फ़ वर्कशीट से कोई अवधारणा नहीं सीख सकता इसलिए वर्कशीट सीखने के सार्थक अनुभवों से जुदा नहीं होनी चाहिए। इनका इस्तेमाल ऐसी अन्य गतिविधियों व खेलों के साथ किया जाना चहिए जिनसे बच्चे सम्बन्ध स्थापित कर सकें और जो उनके भीतर दिलचस्पी पैदा करें, अन्यथा हो सकता है कि ये वर्कशीट वे उद्देश्य पूरे न कर पाएँ जिनके लिए इन्हें बनाया गया है।

वर्कशीट किस प्रकार सीखने में सहायता करती हैं?

सभी कक्षाओं में और मुख्यतौर से कक्षा-4 और उससे आगे की कक्षाओं में, सामान्यतः यह देखा गया कि वर्कशीट पुनरावृत्ति के माध्यम से कक्षा में कराए गए विषयों और विषयवस्तुओं को दोहराने व सुदृढ़ करने में उपयोगी भूमिका निभाती हैं। वर्कशीट स्वभाव से कम निर्देशात्मक भी होती हैं। शुरुआत में एक बार इस बाबत निर्देश देने के बाद कि प्रश्नों पर कैसे काम करना है, शिक्षक की भूमिका बहुत कम हो जाती है। फिर ये निर्देश, बच्चों को अपनी समझ से सवालों के हल निकालने में सहायता करते हैं। उदाहरण के तौर पर, यह देखा गया कि जिन बच्चों के लिए पढ़ना नई बात नहीं थी वे वर्कशीट के अभ्यासों के ज़रिए किसी कहानी में आए क़िरदारों के नामों, क्रिया शब्दों व आम जानकारी वाले शब्दों (sight words) जैसे महत्त्वपूर्ण शब्दों (key words) के साथ और समय बिता पाए और परिणामस्वरूप वे इन शब्दों के उपयोगों से और अधिक परिचित हो पाए।

पहले सीखी गई बातों को याद कर दोहराने के मौक़े मिलना किसी नए विचार को भलीभाँति समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसी के साथ, वर्कशीट आत्मनिर्भरता से सीखने के उद्देश्य को भी सुगम बनाती हैं।

वर्कशीट की कमियाँ

हालाँकि जब शुरुआती कक्षाओं को पढ़ाने की बात आती है, ज़रूरी नहीं कि ऊपर बताई गई बातें हमेशा हों और वर्कशीट में कुछ कमियाँ देखी जा सकती हैं जिनका यहाँ विस्तार से वर्णन किया है। कक्षा में वर्कशीट का इस्तेमाल करने की जो सीमाएँ हैं उनका ताल्लुक वर्कशीट से कम और उनका इस्तेमाल कैसे किया जाता है, इस पर ज़्यादा निर्भर होता है। सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वर्कशीट के अभ्यास ज़्यादातर अलग-थलग किए जाते हैं। जब इन्हें कक्षा-1 से 3 में स्वतंत्र कार्य के लिए या सिर्फ़ अभ्यास कार्य के तौर पर इस्तेमाल किया गया, तो इन्हें ऊँची कक्षाओं जैसा प्रभावी नहीं पाया गया। यहाँ ज़्यादातर बच्चों में वर्कशीट पर काम करते हुए ध्यान न देने के लक्षण दिख रहे थे व किसी तरह अभ्यास के सवाल पूरे करने के चक्कर में वे एक–दूसरे से नक़ल कर काम ख़त्म कर रहे थे। ऐसा ख़ासतौर से स्कूल में आए नए बच्चों के साथ हो रहा था जो औपचारिक रूप में छपी हुई सामग्री से बहुत अधिक परिचित नहीं थे या थोड़े-बहुत परिचित थे लेकिन इतने नहीं कि वे समझ बना पाने के प्रयास से पढ़-लिख पाएँ। इन कारणों की वजह से इन कक्षाओं में पुनरावृत्ति के अलावा ऊपर बताए

गए फ़ायदों में से कोई भी नहीं पाया जाता। बिना समझे या मतलब बनाए इस तरह की पुनरावृत्ति का सीखने में कोई ख़ास योगदान नहीं होता। इसलिए सीखने-सिखाने के ऐसे अन्य साधनों का इस्तेमाल ज़रूरी हो जाता है जो किसी अवधारणा को बेहतर ढंग से आत्मसात करने में बच्चों की मदद करने के लिए वर्कशीटों के पूरक की भूमिका निभा सकें।

दूसरी भाषा के शिक्षण के सन्दर्भ में, जहाँ हम वर्कशीट को इसी तरह अलग-थलग ढंग से इस्तेमाल करने की पद्धति देखते हैं, अन्य चुनौतियाँ हो सकती हैं। अँग्रेज़ी के विदेशी भाषा होने के तथ्य को ध्यान रखते हुए हम पाते हैं कि वह कन्नड़ जैसी ज्ञात क्षेत्रीय भाषा से भाषा संरचना व ग़ैर ध्वनयात्मक प्रकृति (non-phonetic nature) के सन्दर्भ में काफ़ी भिन्न है। इस परिस्थिति में ज़रूरी नहीं कि सिर्फ़ वर्कशीट पर भरोसा करना प्रभावशाली ढंग से सीखना सुनिश्चित कर पाए और बच्चों के लिए समझ बनना तब भी दूर की कौड़ी ही रहेगी।

यह ध्यान में रखकर मैंने शिक्षकों की मदद से एक माह कुछ अँग्रेज़ी कक्षाओं में प्रयास किया। इसका लक्ष्य विद्यार्थियों की दिलचस्पी बढ़ाने और अँग्रेज़ी भाषा की बुनियादी अवधारणाओं की उनकी समझ को बेहतर करने के उद्देश्य से वर्कशीट व अन्य शैक्षणिक साधनों पर काम करना था।

अँग्रेज़ी अक्षरों के नामों व ध्वनियों से परिचय कराने की सोच से हर अक्षर के लिए वर्कशीट बनाई गई थीं। इनमें सबसे ज़्यादा ध्यान अक्षर पहचान व शब्दावली निर्माण पर दिया गया था। नली-कली[1] पद्धति के अनुसार चलते हुए, जहाँ बच्चों के समक्ष वर्णमाला के अक्षरों को बढ़ते हुए समूहों में रखा जाता है, पाँच अक्षरों (जिनमें स्वर और व्यंजन दोनों ही थे) C, O, A, P और T को लिया गया।

नीचे दी गई वर्कशीटों में दिए गए अभ्यासों में चित्र को शब्द से मिलाना (दोनों तरफ़ शब्द दिए गए हैं), दिन–प्रतिदिन की वस्तुओं में अक्षर के चिह्न को पहचानना और अन्ततः ग़ायब अक्षरों को भरना शामिल था। आख़िर के कार्य पर ज़्यादा ज़ोर नहीं दिया गया। यहाँ इरादा केवल यह जानने का है कि क्या वे बच्चे, जिन्हें मौखिक अभिव्यक्तियों के कई मौक़े मिले हैं, धीरे-धीरे अक्षरों और ध्वनियों की बेहतर समझ बना पाते हैं।

इन वर्कशीट में कई चित्र भी हैं ताकि बच्चे शब्दों के साथ

Name: Class:

Match the pictures in column A with the words in column B

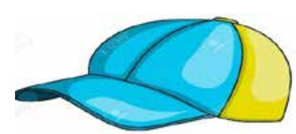
 cap	**car**
 cake	**cow**
 car	**Cap**
 cow	**cake**

 cat	coffee
 coat	cot
 coffee	cat
 cot	coat

Circle the objects in which you can see the letter "C"



Fill in the blanks with the correct spelling:

	__ a p
	c __ k e

	__ a __
	c o __
	__ a t
	c __ a t

बेहतर ढंग से जुड़ पाएँ। इसमें एक कमी यह है कि रंगीन चित्र इस्तेमाल करने के कारण ब्लैक एंड वाइट प्रिंट निकालने पर यह ज़्यादा साफ़ नहीं दिखतीं।

शब्द खेलों से रास्ता बनाना

कहानियों व स्पष्ट निर्देशों के ज़रिए कक्षा में अक्षरों का परिचय देने के बाद सीधे वर्कशीट का इस्तेमाल करने की जगह इस प्रक्रिया में टीएलएम और भाषा के खेलों के उपयोग जैसी कुछ अन्य गतिविधियाँ भी शामिल की गईं जिसके पीछे इरादा इस अक्षर–ध्वनि पहचानने की प्रक्रिया को ज़्यादा ठोस, दिलचस्प व स्पष्ट बनाना था।

बच्चों की दिलचस्पी जगाने के लिए भाषा पर आधारित खेल खेलना एक मज़ेदार तरीक़ा है। खेल का फ़ायदा है कि इनसे बच्चे सीखने के प्रति सचेत रहने के बग़ैर सीख जाते हैं। 'आवाज़ का खेल' या 'ध्वनि का खेल' नियमित रूप से खेला गया, ताकि बच्चे जो सुनें उस पर ज़्यादा सक्रिय रूप से ध्यान दे सकें और खेलने तथा प्रयोग करने की प्रक्रिया के ज़रिए अक्षर और उसकी ध्वनि के बीच जुड़ाव बना सकें। इस खेल को खेलने के लिए किसी सामग्री की ज़रूरत नहीं है, इसे सिर्फ़ बोलकर खेला जा सकता है। बच्चों को पहले कुछ शब्दों के समूह को देखने–सुनने के लिए कहा गया; यहाँ अक्षर C से की /k/ ध्वनि वाले शब्दों जैसे coffee, cap, cake आदि को फ़्लैश कार्ड के साथ इस्तेमाल किया गया। ये शब्द ऐसे थे जिनसे बच्चे परिचित भी थे।

इसके बाद बच्चों को अपनी आँखें बन्द कर उन्हीं शब्दों को सावधानी से फिर एक बार सुनने के लिए कहा गया। यह शब्द आराम से बोले गए और इनको कुछ बार दोहराया गया। बच्चों को फिर अपनी आँखें खोलकर वे शब्द जो उन्होंने सुने, दोहराने के लिए बोला गया। जहाँ कुछ बच्चों ने तो सभी शब्द सही बोले, बाक़ी बच्चे कुछ शब्द ही ठीक बोल पाए। मुँह से निकली ध्वनियों से जुड़े विशिष्ट सवाल पूछे गए, उदाहरण के लिए : क्या तुमने coffee में /k/ (क) की आवाज़ सुनी? वह आवाज़ शुरुआत में आती है या आख़िर में? Cake में कितनी बार /k/ की आवाज़ सुनाई देती है?

अक्षर पहचान के लिए अक्षरों की आकृतियों के कट-आउट का भी टीएलएम के तौर पर इस्तेमाल किया गया। इसके लिए हमें अलग–अलग आकारों में कुछ बुनियादी आकृतियों के कट-आउट चाहिए होंगे, जिन्हें रोज़ में काम आने वाले रीसाईकिल किए गए कार्डबोर्ड या मोटे काग़ज़ से आसानी से बनाया जा सकता है। हमें पता है कि अँग्रेज़ी अक्षर ज़्यादातर देखी हुई आम आकृतियों से बनते हैं जैसे घुमावदार और सीधी रेखाएँ। यहाँ उद्देश्य बच्चों को ऐसी आकृतियों के ज़रिए भौतिक रूप से



कक्षा-1 के बच्चे अक्षरों के कट-आउट से खेलते हुए।

अक्षर बनाने का ठोस अनुभव प्रदान करना है जिन्हें वे छू सकते हैं, महसूस कर सकते हैं और उनके साथ खेल सकते हैं। इससे बच्चों की यह समझ मज़बूत होती है कि अक्षरों को चिह्नों के द्वारा कैसे दर्शाया जाता है और अन्ततः यह समझ बच्चों के लिखना शुरू करते वक़्त एक नींव की तरह काम करती है। ये कट-आउट पहले बच्चों के सामने रखे गए। हर बच्चे को कई आकारों में सभी आकृतियाँ प्राप्त हो सकें, यह सुनिश्चित करना ज़रूरी है। शुरुआत में बच्चों को इन आकृतियों से अपने मन मुताबिक़ चीज़ें बनाने को कहा गया और फिर धीरे–धीरे उन्हें ध्वनि के खेल में इस्तेमाल हुई विशेष ध्वनियों के अक्षर बनाने की ओर ले जाया गया।

इन दोनों गतिविधियों को कराने के बाद व फ़्लैश-कार्ड नियमित रूप से इस्तेमाल करने के पश्चात ही बच्चों को वर्कशीट निजी काम करने के लिए दी गईं। अधिकांश मामलों में यह देखा जा सकता था कि सीखने के अन्य मौक़े मिलने पर बिना सोचे-समझे उत्तरों की नक़ल करने की प्रवृत्ति कम हुई थी।

अन्त में जब भी सम्भव हो सका, हम एक अन्य खेल पिक्शनरी (Pictionary) खेला करते थे। यह खेल नई जानी गई शब्दावली का अर्थ बच्चों के दिमाग़ में गहराई से स्थापित



कक्षा-1 के बच्चे फ़्लैश-कार्ड की मदद से कट-आउट का इस्तेमाल कर शब्द बनाते हुए।

करने में मदद करता है, क्योंकि इस खेल में किसी शब्द का अर्थ अपनी कल्पना व पूर्व ज्ञान के आधार पर व्यक्त करने का प्रयास किया जाता है।

ऐसा बहुत कम होता है कि वर्कशीटों को सीखने–सिखाने के अबाध क्रम में एक माध्यम के रूप में देखा जाता हो। शिक्षा क्षेत्र में शिक्षकों व पेशेवरों के तौर पर हमें वर्कशीटों को एकमात्र उपलब्ध स्रोत के रूप में देखने की बजाय सीखने में एक अन्य संसाधन के रूप में देखना चाहिए। ऐसी वर्कशीट बनानी चहिए जो दिलचस्प हों, हमारे विद्यार्थियों की ज़रूरतों के लिए प्रासंगिक हों और जो बच्चों को ग़लतियाँ करने व अनुमान लगाने की गुंजाइश दे सकें।

नली-कली (आनन्दमय सीखना) सीखने-सिखाने की एक पद्धति है जो प्राथमिक कक्षाओं में बहुकक्षा, बहुस्तरीय कक्षाओं द्वारा पेश की जाने वाली चुनौतियों से पार पाने के लिए यूनीसेफ द्वारा सहायता प्राप्त एक परियोजना के रूप में प्रारम्भ हुई थी।

Endnotes

i *Nali-Kali* (joyful learning) is a teaching-learning approach that started as a UNICEF assisted project to address the challenges posed by multi-grade, multi-level classrooms in primary grades.



वैष्णवी वी शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली एक पेशेवर हैं, जो वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बेंगलूरु में स्रोत व्यक्ति (अँग्रेज़ी) के तौर पर काम कर रही हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु से एमए एजुकेशन की पढ़ाई की है। उनकी रुचियाँ हैं बाल साहित्य, भाषा का शिक्षणशास्त्र व सामुदायिक जुड़ाव के क्षेत्रों में खोजबीन करना। उनसे vaishnavi.v@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मणिका कुकरेजा **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय